P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-9* May- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रेलवे कुलियों की सामाजिक समस्याएँ : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

Social Problems of Railway Porters: A Sociological Analysis

Paper Submission: 14/05/2020, Date of Acceptance: 26/05/2020, Date of Publication: 27/05/2020

नीरज कुमार राय
जूनियर रिसर्च फैलो,
समाज शास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

अर्जित प्रस्थिति आधुनिकता की एक प्रबल पहचान है जहाँ दक्षता एवं शिक्षा की मद्द से व्यक्ति अपने जीवन में गुणात्मक बदलावों को प्राप्त करता है एवं सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुर्नउत्पादन को प्रगतिशील ढंग से उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का प्रयास करता है जबकि रेलवे कुली का कार्य अर्जित प्रस्थिति के विपरित पीढ़ीगत एवं प्रदत्त प्रस्थिति के रूप में दिखायी देता है। अतः कार्य व्यवहार कि इस संस्कृति की प्रवृत्ति की अन्वेषाणात्मक पड़ताल इस शोध पत्र का मुख्य विषय है।

Earned status is a strong hallmark of modernity where a person achieves qualitative changes in his life with the help of efficiency and education and strives to progress social and cultural reproduction progressively while the work of railway porter contrasts with earned status appears as a generational and paid status. Therefore, an exploratory investigation of the trend of this culture of work behavior is the main topic of this research paper.

मुख्य शब्द : अर्तनिहित सरचना, वस्तुनिष्ठ, व्यक्तिनिष्ठ, समस्या, आय, शिक्षा, जीविका निर्वाह।

Built-In Infrastructure, Objective, Subjective, Problem, Income, Education, Subsistence.

प्रस्तावना

व्यक्ति, समूह, समुदाय की प्रगति में बाधक कोई भी तत्व सामाजिक समस्या के रूप में स्वीकार किया जाता है। समाज में ऐसी मान्यता है कि व्यक्ति की प्रगति के लिए, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं भोजन के साथ इनको प्राप्त करने के लिए पर्याप्त आय अर्जन की समुचित व्यवस्था के अभाव में समाज समूह एवं अन्तोगत्वा व्यक्ति का विकास रूक जाता है। वोरदियू ने अपने सामाजिक सिद्धान्त में व्यक्ति के विकास को अन्तर्निहित (इम्बेडेड) संरचना के विकास के रूप में स्थापित किया है। जिसके अन्तर्गत व्यक्ति एवं अन्ततोगत्वा समाज के विकास के लिए शिक्षा एवं दक्षता एक महत्वपूर्ण आयाम होता है। सामाजिक विकास के इन प्रतिमानों को ध्यान में रखते हुए यदि हम रेलवे कुली की प्रस्थिति एवं परिस्थिति को देखें तो हम पाते हैं कि रेलवे कुली एक ऐसा श्रमिक समूह है जिसकी स्वयं की जीवनचर्या एवं परिवार उसके बोझ उठाकर किए गए श्रम द्वारा प्राप्त आय से चलता है। साथ ही बोझ उठाकर आय अर्जन का यह कार्य पीढ़ीगत पेशे के रूप में किया जाता है जहां रेलवे स्टेशन पर कार्य कर रहा श्रमिक अपने पिता, दादा या नजदीकी रिश्तेदार द्वारा छोड़े गए कार्य पर अपना रजिस्ट्रेशन कराकर पुनः इस बोझ के उठाने के कार्य को करता है। जीविका निर्वहन के लिए समाज में किसी भी स्वीकृत पेशे/कार्य को करना उचित, मूल्यों एवं मानदण्डों के अनुकूल माना जाता है लेकिन आधुनिक समाज में व्यक्ति की गतिशीलता एवं उसकी अर्जित प्रस्थिति को निरंतर आगे बढ़ने के रूप में स्वीकार किया जाता है, इन परिस्थितियों में रेलवे कुली के द्वारा पीढ़ीगत बोझढ़ोने के कार्य में लगे रहना व्यक्ति की स्व प्रगति में एक बाधा के रूप में दिखाई देता है, और यह एक समस्या के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है कि आखिर ऐसा कौन सा कारण है कि कोई समूह आधुनिक भारत में अर्जित प्रस्थिति की बजाय प्रदत्त ढंग से कार्य से जुड़ा हुआ है। वह भी ऐसी जगह पर जिसे आधुनिकता का वाहक माना जाता है। हाँ ढक्षता एवं क्षमता के

अर्जन के अभाव में पीढ़ियों का निरंतर श्रम कार्य में लगे रहना एक अभाव के रूप में स्वीकार किया जाता है लेकिन अभाव का यह चक्र एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में तोड़ने का प्रयास ना कर पुनः पीढ़ीगत रूप में श्रम के कार्य को स्वीकारना एवं कार्य से जीवनचर्या को आगे बढ़ाना रेलवे कुली को अध्ययन का एक विषय बनाता है।

कार्य के समाजशास्त्र का उद्भव

ग्रामीण जीवन में श्रमिकों का शहर की ओर पलायन/प्रवजन का प्रमुख कारण औद्योगिकरण एवं शहरीकरण को माना गया। समाजशास्त्र में इनसे जुड़े समूह, संस्थाओं एवं संगठनों के अध्ययन के लिए औद्योगिक समाजशास्त्र एवं शहरी समाजशास्त्र का जन्म हुआ यदि हम औद्योगिक समाजशास्त्र की विषयवस्तु को हम ध्यानपूर्वक देखें तो पायेंगे कि शहरी श्रम का अधिकांश भाग ना तो औद्योगिक उत्पादक इकाइयों में कार्य करता है ना ही वह कृषि श्रम से ही जुड़ा है अतः इस श्रम ढाचे को हम समाजशास्त्र के किस परिप्रेक्ष्य से जाने एवं समझे क्योंकि श्रम कार्य से जुड़े इस भाग को ना तो औद्योगिक सांगठनिक व्यवस्था के तहत माना जाता है ना तो इसे शहरी नौकरीशाह जैसे औपचारिक ढ़ाचे में शामिल किया जा सकता है। इसी के परिणाम स्वरूप श्रम का वह भाग/हिस्सा जो औद्योगिक/उत्पादक इकाई में शामिल नहीं था लेकिन वह नौकरशाही तंत्र से जुड़ा तो था लेकिन इस औपचारिक सागठनिक श्रम का हिस्सा नहीं था। इस ढंग के श्रम को समायोजित करने के लिए कार्य के समाजशास्त्र का उद्भव 1940 में हुआ। ताकि विद्यागत रूप से उस छुटे हुए श्रम का अध्ययन किया जा सके। जिसका प्रत्यक्ष जुड़ाव औद्योगिक इकाई से नहीं होता लेकिन शहर एवं उद्योग के परिप्रेक्ष्य में इनका जीवन चक्र का कार्य चलता है।

कार्य के समाजशास्त्र का अवधारणात्मक स्वरूप

सोशल आर्गेनाइजेशन ऑफ वर्क को परिभाषित करते हुए कहा है कि भौतिक वस्तुओं एवं सेवाओं का सृजन करना कार्य है जो प्रत्यक्ष तौर पर श्रमिकों के द्वारा उपयोग किया जाता है। इस प्रकार कार्य के अन्तर्गत ना केवल भुगतान पर नियोजित श्रमिक बल्कि स्वनियोजित श्रम के साथ बिना भुगतान वाले श्रम को भी शामिल किया जाता है। इसके अन्तर्गत घर के अन्दर उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को भी रखा जाता है।

समाजशास्त्र एन0सी0इ0आर0टी0 (2006) के अनुसार एक बच्चे एवं प्रौढ़ के रूप में बड़े होकर हम किस प्रकार का कार्य करेंगे यहां कार्य का तात्पर्य भुगतान युक्त रोजगार से है। यह आधुनिक भारत में कार्य को समझने का अति सरलीकृत दृष्टिकोण है क्योंकि कई प्रकार के कार्य भुगतान युक्त विचार से मेल नहीं खाते अधिकतर कार्य अनौपचारिक आर्थिक गतिविधि से जुड़े होते है। उदाहरण के तौर पर कहीं पर भी सरकारी आकड़ों में दर्ज नहीं होते। यहां अनौपचारिक अर्थतंत्र इस बात की ओर इंगित करता है कि नियंत्रित रोजगार के बाहर का लेन–देन जहां कई बार सेवा के बदले नगद में लेन–देन/भुगतान किया जता है लेकिन अक्सर वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रत्यक्ष विनियम को भी इसमें शामिल किया जाता है। इस प्रकार हम कार्य को परिभाषित कर सकते हैं जहां भुगतान एवं बिना भुगतान जो मानसिक और भौतिक प्रयासों के द्वारा कार्य किया जाता है उनको कार्य के अन्तर्गत शामिल किया जाता है।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंस (2011) के अनुसार समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र में गतिविधि एवं श्रम जो समाज की उत्तर जीविता के लिए आवश्यक है उसे कार्य कहा जाता है इसे और आगे बढ़ाते हुए यह कहा गया है कि प्रारम्भिक मानव की जो गतिविधिया थीं उनमें शिकार एवं भोजन इकट्ठा करना शामिल था। 40000 बी0सी0 के पूर्व शिकार पर निगाह रखने एवं भोजन इकट्ठा करने के लिए शिकार का कार्य समूह के स्तर पर बटंवारा किया जाता था। जनजाति समूह के वे लोग जो प्रौढ़ या कमजोर थे उनको भोजन इकट्ठा करने के लिए ज्यादा उपर्युक्त माना जाता था। ऐसा माना जाता है कि गर्भधारण एवं देखभाल के कारण महिलाएं शिकार कार्य में भागीदारी नहीं करती थी। कुछ आदिमजनों ने हथियार बनाने का प्रदर्शन किया जो आरम्भिक श्रम के विभाजन के रूप में देखा जाता है।

सामाजिक समस्या एवं समाजशास्त्र : अवधारण एवं कारण

सामाजिक समस्या एक अवस्था या व्यवहार का प्रकार है जिसे अधिकांश लोग हानिकारक मानते है। इसमें से कुछ अवस्थाएं प्रत्यक्ष तौर पर लोगों को प्रभावित करती है। जैसे पर्याप्त आवश्यक भोजन मकान और कपड़े की खरीद के लिए पर्याप्त धन का अभाव, रोजगार पाने में असफल होना, प्रदूषित माहौल से प्रभावित होना। इसमें से कोई भी अवस्था या व्यवहार जो सामाजिक समस्या हो सकता है वह अपने अस्तित्व की वास्तविकता पर निर्भर ना होकर सार्वजनिक स्वीकृति/चिन्ताओं पर निर्भर करता है। विद्ववतजनों का मानना है कि व्यापक चिन्ता एवं अस्तित्व की वास्तविकता के साथ किसी भी सामाजिक समस्या के दो रूप होते है। 1. वस्तुनिष्ठ तत्व, 2. व्यक्तिनिष्ठ तत्व

वस्तुनिष्ठ तत्व से तात्पर्य है समस्या की वास्तविक अवस्था से है जैसे कि भोजन का पर्याप्त उपलब्धता होना, स्वास्थ्य सेवाओं एवं शिक्षा की अनुपलब्धता, अशिक्षा इत्यादि समस्या के व्यक्तिनिष्ठ तत्व से तात्पर्य है लोगों में इन समस्याओं के प्रति चिन्ता का होना। जानकारी का होना। साथ ही इस समस्या को दूर करने की इच्छा और इसमें विश्वास करना कि इस समस्या का समाधान सम्भव है। सामाजिक समस्या का वस्तुनिष्ठ तत्व व्यक्तिपरक ढंग से अनुभव एवं इसका मापन किया जाना है जैसे कि कितने लोग बेरोजगार है। कोई समस्या सामाजिक है या नहीं इसके विकास की प्रक्रिया का प्रारम्भ तब होता है जब कोई विशेषज्ञ इन पर कोई क्लेम प्रस्तुत करें कि कोई व्यवहार या अवस्था हानिकारक है और दूसरों को इसके प्रति मनवाने का प्रयास करता है। इस प्रकार

कोई भी व्यवहार या अवस्था इन परिस्थितियों में एक सामाजिक समस्या के रूप में स्वीकार किया जाता है।

सामाजिक समस्या का सामाजिक प्रसंग

किसी भी समस्या को जानने एवं उसके विकास को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम उसके सामाजिक प्रसंग को जाने। उस समाज की विशेषताओं को जानना जिससे वह समस्या विकसित हुई है इसके तहत दो अवयवों को शामिल किया जाता है। एक उस समाज की संरचना एवं दूसरा उसकी संस्कृति। सामाजिक संरचना लोगों के बीच सामाजिक व्यवहारों एवं सम्बन्धों का आपेक्षतः ज्यादा स्थाई प्रारूप होता है। इसका तात्पर्य है समाज कैसे व्यवस्थित/संगठित है। सामाजिक संस्था से तात्पर्य है सामाजिक सम्बन्धों की निरंतर प्रारूप जो लोगों की इच्छाओं एवं जरूरतों को पूरा करने वाला होता है जो समाज को सही ढंग से संचालित करने के लिए एक जरूरी भाग होता है। महत्वपूर्ण संस्थाओं के अन्तर्गत परिवार, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति एवं सरकार, स्वंय सेवा, व्यवस्थित धर्म, संचार एवं मीडिया को माना जाता है। सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण भाग सामाजिक स्तरीकरण को माना जाता है जो लोगों के बीच असमानता को व्यक्त करता है। जिनका कुछ सामाजिक साधनों पर उपलब्धता नहीं होती। जैसे कि शिक्षा, आय, सम्पदा, शक्ति, सम्मान आदि–। जैसे कि यदि कोई व्यक्ति सम्पन्न परिवार में जन्म लेता है तो यह स्वीकार किया जाता है कि वह अच्छी शिक्षा, भी प्राप्त कर पायेगा। इनकी शिक्षा प्राइवेट संस्थाओं एवं उचित ट्वीशन को देने में सक्षम होने के कारण बेहतर संस्थाओं से अपनी शिक्षा प्राप्त करने में सफल होते है। जहां एक तरफ सामाजिक संरचना समाज के व्यवस्थागत स्वरूप को बताता है, वहीं संस्कृति, ज्ञान, सोचने के ढंग, व्यवहार करने के ढंग, भौतिक वस्तुए जो लोगों के जीवन शैली को दर्शाती है। संस्कृति के तत्व जिनसे सामाजिक समस्या को समझना आसान हो जाता है। वे है, मूल्य, मानदण्ड, विश्वास, आदि।

सामाजिक समस्या का इतिहास

कोई भी समस्या एक दिन या रात में उत्पन्न नहीं होती, मैलकमस्पेक्टर एवं जानकितूसी(1987) का मानना है कि किसी भी समस्या की पहचान व्यक्तिनिष्ठ प्रक्रिया का भाग होता है। इन्होंने सामाजिक समस्या के निर्माण की प्रक्रिया के लिए चार चरणों की पहचान की–चरण–1–इस चरण को रूपान्तरणकारी चरण कह कर सम्बोधित किया। इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत समस्या, सार्वजनिक समस्या के रूप में बदल जाती है। इसके अन्तर्गत कोई एक्टिविस्ट या प्रभावकारी समूह या उससे जुड़ा कोई वक्ता मुद्दे को समस्या के रूप में पहचान स्थापित करता है। चरण–2–इसके अन्तर्गत वैधानिकरण का प्रयास किया जाता है। इसके अन्तर्गत समस्या के साथ कैसे पेश आना है उसके औपचारिकरण रूपान्तरण के ढंग को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। चरण–3–यदि चरण दो की प्रक्रिया सही ढंग से पूरी नहीं की जाती उन परिस्थितियों में इसे संघर्ष का चरण माना जाता है।चरण–4 के अन्तर्गत यह तब प्रारम्भ किया जाता है जब समूह यह स्वीकार कर ले कि स्थापित प्रणाली में कार्य करना असम्भव है।

सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

पीयरे वीरदियू (1986) के अनुसार समाज में वर्ग का निर्माण पूंजी के अनुसार होता है और यह पूंजी समाज में मुख्यतः चार रूपों में होती है। जिसके पास जिस प्रकार की पूंजी होती है उसके द्वारा उसी प्रकार के समूह का प्रतिनिधित्व किया जाता है अर्थात् विविध ढंग की पूंजी उसकी समाज स्थिति का निर्धारक होती है। वीरदियू ने इस सन्दर्भ में चार प्रकार की पूंजी को बताया। 1 आर्थिकपूंजी, 2. सामाजिक पूंजी, 3. सांस्कृतिक पूंजी, 4. सांकेतिक पूंजी।

मैक्सवेवर (1920) का मानना था कि व्यक्ति की बाजार प्रस्थिति उसकी वर्ग प्रस्थिति का निर्माण करती है। अतः कुली समाज मैक्सवेबर के अनुसार श्रमिक समाज का निर्माण आय एवं बाजार प्रस्थिति के अनुसार दिखाई देता है।

दुर्खीम (1914) के अनुसार श्रम का विभाजन समाज के संगठनात्मक/ढांचागत व्यवस्था को बनाये रखने में महत्वपूर्ण होता है जैसे–जैसे औद्योगीकरण की प्रक्रिया एवं श्रम के विविधिकरण का फैलाव होता है व्यक्ति अपने कार्यों से दूसरे से सावयवी ढंग से जुड़ जाता है। उत्पादन की प्रक्रिया का यह जुड़ाव समाज को व्यवस्थित करने में मद्द करता है जब तक की व्यवस्था में असामान्य परिस्थिति उत्पन्न ना हो और अन्तोगत्वा असामान्य स्थिति सामाजिक समस्या को जन्म देता है।

सी0 राइट मिल्स (1959) ने सामाजिक समस्या के अध्ययन के लिए इस बात पर बल देते हैं कि समाजशास्त्रीय परिकल्पनाए (सोशियोलॉजिकल इमेजिनेशन) हमें व्यक्तिगत समस्या और सार्वजनिक मुद्दे के बीच अन्तर करना सिखाती हैं। समाजशास्त्रीय परिकल्पना हमें हमारे व्यक्तिगत जीवन और अनुभव को सामाजिक विश्व से जोड़ने में सक्षम बनाती है।

पीटर वर्जर एवं लकमैन (1966) में वास्तविकता का सामाजिक निर्माण (सोशल कांस्ट्रक्शन ऑफ रियालटी) की अपनी परिचर्चा में इस बात पर बल देते है कि किसी समस्या की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता हमें यह बताती है कि कैसे हम किसी समस्या को समस्या के रूप में स्वीकार करें, यह विचार उनके सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ रियालिटी की अवधारणा में अन्तर्निहित है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार सामाजिक समस्या वस्तुनिष्ठ ढंग से पूर्वनिर्धारित नहीं होती। यह तभी वास्तविक बनती है जब वह व्यक्तिनिष्ठ ढंग से परिभाषित होती है एवं समस्या के तौर पर स्वीकृत होती है, इस परिप्रेक्ष्य को सोशल कन्सट्क्टविज्म कहा जाता है।

साहित्यावलोकन

एलिस सुलिवन (1998)ने 465 बच्चों पर अपने सर्वे में यह पाया कि माता–पिता का व्यवसाय.....आदि जो उच्च प्रस्थिति से जुड़ा है। उस स्थिति में यह माता–पिता की प्रस्थिति का प्रयोग बच्चों की सामाजिक

प्रस्थिति के निर्धारण में किया। माता–पिता के शैक्षिक योग्यता का प्रयोग उनके सांस्कृतिक पूंजी के निर्धारण में किया। इस कार्य के लिए सुलिवन ने बच्चों के द्वारा पढ़ी जाने वाली किताबों, टेलीविजन, प्रोग्राम जो वो देखते थे, जो संगीत वे सुना करते थे और वे जीन कला प्रदर्शनियों को देखने जाते थे एवं जिन नाटक एंव संगीत सभा में जाते थे और उनके सांस्कृतिक सम्पूर्णता के ज्ञान को भी उनके शब्दकोष के अनुसार जांचा परखा गया। इस पूरी प्रक्रिया के अन्त में सुलिवन का निष्कर्ष था कि बच्चों की सांस्कृतिक पूंजी माता–पिता के सांस्कृतिक पूंजी के साथ मजबूत सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

रिचर्ड लैम्बर्ट (1963) पश्चिमी भारत के पूना के पास कारखानों के अध्ययन में पाया कि श्रमिक छोटे कारखानों में काम करते हुए न्यूनतम मजदूरी प्राप्त करते थे। एवं शायद ही उन्हें कोई सामाजिक सुरक्षा दिया जाता था जैसे ही इन्हें किसी दूसरी बड़ी फैक्ट्री में काम मिलता वे तुरन्त छोड़कर जहां पक्की सामाजिक सुरक्षा एवं उच्च वेतन पाने की निश्चितता हो वहां चले जाते थे।

ब्रीमेन (2011) का मानना है कि कार्य के घण्टों के स्तर पर असंगठित क्षेत्र में श्रमिक संगठित क्षेत्र की तुलना में ज्यादा समय देते है, साथ ही देर वक्त तक काम करते हैं।

डेनिस विटरिग एवं गरवेन नाटवूम (2010) ने मुम्बई के शहादरा रेलवे स्टेशन के रेलवे कुलियों के अध्ययन में पाया कि वेतन एवं कार्य की दशाएं न्यूनतम जरूरत को पूरा करने में सक्षम नहीं होती। जिसके कारण लम्बे समय तक कार्य करना पड़ता है। असुरक्षित रोजगार, अनियमित आय, स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता, साथ ही वृद्धावस्था एवं सेवानिवृत्ति का कोई समुचित प्रबन्ध नहीं होता।

रवि एस0 श्रीवास्तव (2011) का कहना है कि श्रमिकों के लिए रोजगार का बाजार अत्यन्त ही स्तरीकृत है जिन समूहों के पास संसाधनों एवं शिक्षा तक अच्छी पहुंच है वे अच्छा रोजगार पाने में सफल होते है। वनिस्पत उनके जिनके पास इन संसाधनों की उपलब्धता नहीं होती एवं उनकी प्रस्थिति भी निम्न होती है। आव्रजन करने वाले लोगों के संदर्भ में देखे तो जो गांव से शहर की ओर आव्रजन करते है पढ़ाई एवं संसाधन उनके गरीब प्रस्थिति के लिए प्रमुख कारण होते है। इसके परिणामस्वरूप अल्प अवधि किस्म के रोजगार को पाने में सक्षम हो पाते है।

शैक्षणिक स्थिति का विवरण

शिक्षा ना केवल व्यक्ति बल्कि समाज के बेहतर जीवन का निर्धारक होता है साथ ही इससे भविष्य की दशाऐं भी सुनिश्चित की जाती है वर्तमान में शिक्षित व्यक्ति न केवल स्वयं बल्कि देश के भविष्य निर्माण में भी अपना योगदान देता हैं। साथ ही शिक्षा से प्राप्त प्रतिफल उसके आय अर्जन के रूप में भी प्राप्त होता है और वह इसके परिणाम स्वरूप स्वयं के स्तर पर बेहतर सामाजिक पुर्नउत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करता है।

शोध कार्य से प्राप्त आँकड़े एवं उनका विश्लेषण

सारणी–1

शैक्षणिक स्थिति

शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
5	26	17.3
7	2	1.3
8	21	14.0
9	12	8.0
10	15	10.0
11	1	0.7
12	17	11.3
स्नातक	9	6.0
एल0एल0बी0	1	0.7
परास्नातक	1	0.7
अशिक्षित	44	29.3
शिक्षित	1	0.7
कुल योग	**150**	**100.0**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गए प्रश्न के जवाब में 26 लोगों ने यह स्वीकार किया वह साक्षर है अर्थात् 5वीं तक शिक्षा प्राप्त किये हुए है। वहीं 02 लोगों ने 7वीं, 21 लोग 8वीं, 12 लोग 9वीं, 15 लोग 10वीं, उनमें से 01 लोग 11वीं और 17 लोग 12वीं पास थे जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.3, 14 प्रतिशत, 8 प्रतिशत, 10 प्रतिशत, .7 प्रतिशत, 11.3 प्रतिशत है। उच्च शिक्षा के रूप में 9 लोग स्नातक, 1 एल0 एल0 बी0, 1 परास्नातक जिनका प्रतिशत क्रमशः 6 प्रतिशत एवं 7 प्रतिशत, 7 प्रतिशत है। 45 लोग अशिक्षित थे जिनका कुल प्रतिशत लगभग 30 है।

कार्य से अर्जित आय का परिवार के खर्च के लिए पर्याप्तता का विवरण

कोई भी व्यक्ति जब किसी कार्य को करता है वह उससे प्राप्त श्रम कीमत से अपने जीवन निर्वाह के लिए प्राप्त करता है लेकिन श्रम के बदले प्राप्त कीमत से यदि स्वयं के जीवन के साथ यदि परिवार का खर्चा न पूरा हो पाने की स्थिति में जीवन की गुणवत्ता विशेषकर शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा, में ह्रास देखा जाता है।

सारणी–2

आप जो आय अर्जन करते हैं परिवार के खर्च के लिए पर्याप्त है।

आर्य अर्जन	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	12	8.0
नहीं	138	92.0
कुल योग	**150**	**100.0**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में 138 अर्थात् 92 प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया कि उनके श्रम से अर्जित आय उनके जीवन निर्वाह के लिए प्रयाप्त नहीं। वहीं मात्र 12 लोगों ने अर्थात् 8 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि उनके श्रम की कीमत से प्राप्त आय उनके जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त है।

कार्य के बाद खाने के प्रबन्ध का विवरण

व्यक्ति के जीवन में तीन चीजों की विशेष महत्ता मानी जाती है उनमें से भोजन, कपड़ा, मकान

आदि प्रमुख हैं, इनमें से किसी के अभाव में जीवन में एक अधूरापन रहता है। भोजन के बारे में कहा जाता है कि स्वस्थ्य एवं पोषणयुक्त भोजन व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक विकास की कुँजी है। ऐसी परिस्थिति में यदि भोजन की गुणवत्ता ठीक न हो तो व्यक्ति न केवल शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर दुर्बल हो जाता है बल्कि उसका कार्य प्रभावित होता है।

सारणी–3

जब कुली का कार्य करते हैं तो खाने का इंतजाम कैसे करते है।

खाना	आवृत्ति	प्रतिशत
होटल में	124	82.7
वहीं बनाते हैं	23	15.3
टिफिन लेकर जाते है	1	0.7
अन्य	2	1.3
कुल योग	150	100.0

150 उत्तरदाताओं से पूछे गए प्रश्न के जवाब में 124 लोगों ने अर्थात् 82.7 प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया कि वह अपना खाना होटल में खाते है। वहीं 23 लोग अर्थात् 15.3 प्रतिशत ने स्वीकार किया वह अपना भोजन कुली निवास स्थल में बनाते हैं जबकि 01 लोग अर्थात् 0.7 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि वह अपना भोजन घर से बनाकर टिफिन में लाते है जबकि 02 लोगों ने अर्थात् 1.3 प्रतिशत ने उसके प्रतिउत्तर में कोई जवाब नहीं दिया।

आय के अन्य स्रोत का विवरण

भारत एक कृषि प्रधान देश है। अतः अधिकांश में यह देखा जाता है कि जो व्यक्ति श्रम बाजार से जुड़ा है वह कृषि साधनों से भी अपने आय का अर्जन करता है।

सारणी–4

कुली के अतिरिक्त आपके परिवार का कोई अन्य आय का स्रोत

आय के विविध स्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
कृषि	65	43.3
केवल श्रम	48	32.0
कोई अन्य समाधान नहीं	4	2.7
कुल योग	150	100.0

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में 65 लोगों ने लगभग 43.3 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि वे कृषि से भी आय का अर्जन करते है। वहीं 48 लोगों ने अर्थात् 32 प्रतिशत ने आय को श्रोत केवल श्रम कार्य से ही जुड़ा हुआ है और जबकि 4 लोगों ने अर्थात् 2.7 प्रतिशत केवल कुली कार्य पर ही निर्भरता को स्वीकार किया है।

बीमारी के समय इलाज का प्रबन्ध

स्वस्थ्य शरीर के बिना कार्य से अर्जन नहीं किया जा सकता है क्योंकि किसी भी श्रम कार्य के लिए शारीरिक रूप से स्वस्थ होना जरूरी है। बेहतर स्वास्थ्य की सुविधा के द्वारा ही हम इस स्थिति को हम प्राप्त कर सकते है।

सारणी–5

बीमार होने पर इलाज कहाँ कराते है।

मेडिकल सुविधाएं	आवृत्ति	प्रतिशत
प्राइवेट डाक्टर	33	22.0
सरकारी डाक्टर	110	73.3
अन्य	7	4.7
कुल योग	150	100

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में 110 लोगों ने अर्थात् 73.3 प्रतिशत यह स्वीकार किया कि बीमारी कि स्थिति में वे सरकारी डॉक्टर से अपना परामर्श लेते है। वहीं 33 लोगों ने अर्थात् 22 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया की बीमारी की स्थिति में वह अपना इलाज प्राइवेट डाक्टर के परामर्श से करते हैं। जबकि 7 लोग अर्थात् 4.7 प्रतिशत में इसके प्रतिउत्तर में कोई जवाब नहीं दिया।

रेल विभाग से मिलने वाली सुविधाओं का विवरण

रेलवे कुली रेलवे विभाग के कार्यस्थल पर कार्य करने वाले श्रमिक समूह है यह वहाँ स्थाई तौर पर स्वयं का कार्य करता है। रेलवे से उसको कुछ सुविधाऐं भी देने का प्राविधान है ताकि उसके जीवन से जुड़ी न्यूनतम सामाजिक सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके।

सारणी–6

क्या आपको रेलवे के अन्य कर्मचारियों जैसी सुविधाएं मिलती है।

प्राप्त सुविधाएं	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	4	2.7
नहीं	146	97.3
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के प्रतिउत्तर में 146 लोगों ने अर्थात् 97.3 प्रतिशत ने स्वीकार किया की उन्हें कोई सुविधा नहीं दी जाती है जबकि 4 लोगों ने अर्थात् 2.7 प्रतिशत ने स्वीकार किया उनको रेल विभाग की तरफ से दूसरे कर्मचारियों के समकक्ष सुविधाऐं दी जाती है।

मासिक औसत आय का विवरण

आय व्यक्ति के सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण निर्धारक होता है आय से व्यक्ति का समाज में न केवल वर्गीय निर्धारण होता है कि बल्कि व्यक्ति के स्वयं के परिवार की वर्तमान सामाजिक प्रस्थिति एवं भविष्य निर्माण स्थिति का भी प्रमाण चलता है। जीवन की गुणात्मकता के लिए निवेशित धन से उसके शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आवास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों को भी सहजता से जाना जा सकता है।

सारणी–7

आप अपने कार्य से कितनी मासिक औसत कितनी आय कर पाते हैं।

मासिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
5000	8	5.3
6000	124	82.7
7000	15	10.0
8000	3	2.0
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्नों के जवाब में 124 लोगों ने यह स्वीकार किया उनकी औसत मासिक आय 6000 है जबकि 15 लोगों ने अर्थात् 10 प्रतिशत लोगों ने यह माना कि उनकी मासिक आय 7000 है वहीं 8 लोगों ने अर्थात् 5.3 प्रतिशत ने यह माना कि मासिक आय 5000 है एवं 03 लोगों ने अर्थात् 2 प्रतिशत उनकी मासिक औसत आय 8000 है।

कार्य के घण्टों की स्थिति

शरीर से कितना श्रम किया जाय इसका एक तय मानक है। विशेषकर लोकतांत्रित सभ्य समाज में 8 घण्टे का कार्य मान्य एवं शरीर के अनुकूल माना जाता है। कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर यह मानक स्वास्थ्य शरीर एवं मष्तिष्क के सुचारू ढंग से कार्य करने के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

सारणी–8

आप कितने घण्टे काम करते हैं।

समय	आवृत्ति	प्रतिशत
8 घण्टे	8	5.3
12 घण्टे	72	48.0
15 घण्टे	1	.7
कोई निश्चित नहीं	69	46.0
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में 72 लोगों ने अर्थात् 48 प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया कि वे 08 घण्टे से अधिक कार्य करते हैं। वहीं 08 लोगों ने 08 घण्टे अर्थात् 5.3 प्रतिशत कार्य करने 01 लोग अर्थात् .7 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि 15 घण्टे कार्य करते है। जबकि 69 लोगों ने लगभग 46 प्रतिशत ने इस बात को स्वीकार किया कि उनके द्वारा काम का कोई निश्चित समय नहीं है। अर्थात् अधिकांश कुली 08 घण्टे से ज्यादा कार्य करते है।

कार्य के समय थकान मिटाने के स्थल का विवरण

जिस प्रकार भोजन शरीर की जैवकीय गतिविधि को संचालित करने के लिए आधारभूत तत्व के रूप में स्वीकार किया जाता है वैसे ही कार्य के बाद व्यक्ति के सुरक्षित शारीरिक स्थिति के लिए आराम के आवास या कार्यस्थल पर विश्राम की समुचित व्यवस्था से कार्य की गुणवत्ता एवं शरीर की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक हो जाता है।

सारणी–9

कार्य के समय थकान को मिटाने के लिए कहाँ जाते हैं।

	आवृत्ति	प्रतिशत
रेलवे स्टेशन	132	88.0
किराए के मकान में	16	10.7
स्वयं के घर में	1	0.7
कुली के लिए बने मकान में	1	0.7
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं में 132 लोगों ने अर्थात् 88 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि वे अपना आराम स्टेशन पर ही करते है। जबकि 16 लोगों ने अर्थात् 10.7 प्रतिशत ने घर में ही थकान मिटाने की बात को स्वीकार किया जबकि 1–1 लोगों ने जिनका प्रतिशत क्रमशः 0.7 एवं 0.7 है स्वयं के घर एवं कुली के बने आवास में आराम करने का स्थल चुना।

स्वयं के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्य का कुली के कार्य से जुड़ाव

आधुनिक समाज के लोगों में कार्य की गतिशीलता की प्रवृत्ति देखी जाती है अर्थात् जातिय से जुड़े कार्य का ह्रास होता जाता है अर्थात् व्यक्ति शिक्षा एवं दक्षता आधार हित कार्य पर निर्भर होता जाता है। जीवन में आर्थिक लोकतांत्रिकिकरण की प्रक्रिया में कार्य के बेहतर विकल्प की स्थिति को देखने को मिलता है और यह समाज में एक बेहतर स्थिति के साथ सकारात्मक रूप में स्वीकार भी किया जाता है।

सारणी–10

आपके परिवार में इस कार्य से कोई और भी जुड़ा है।

कार्य से परिवार के अन्य सदस्य का जुड़ाव	आवृत्ति	प्रतिशत
पिता	145	96.7
दादा	2	1.3
बेटा	2	1.3
चाचा	1	.7
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न में 145 लोगों ने यह स्वीकार किया कि उनके पिता कुली के कार्य को करते थे। 02 लोगों ने 1.3 प्रतिशत लोगों ने यह माना था कि उनके पिता के साथ दादा भी इस कार्य से जुड़े थे। 02 लोगों ने अर्थात् 1.3 प्रतिशत लोगों ने इस बात को स्वीकार किया कि पिता के साथ पुत्र एवं 01 लोग अर्थात् .7 प्रतिशत का कहना था कि उनके चाचा भी इस कार्य से जुड़े थे। अधिकांश में यह देखा गया कि 02 पीढ़ियां कुली के कार्य से जुड़ी हुई थी।

रेलवे के स्थाई कर्मचारियों द्वारा कुलियों के साथ व्यवहार की स्थिति

समाज में व्यक्ति जैविक रूप से तो समान होता है लेकिन कार्य एवं उपादेयताओं के आधार पर निर्धारित पहचान से भी व्यक्ति का दूसरे व्यक्तियों के प्रति व्यवहार में अन्तर देखा जाता है। रेल विभाग में रेलवे कुली एक श्रमिक का कार्य करता है जबकि शेष

कार्य करने वाले लोग पदसोपानिक सांगठनिक व्यवस्था के भाग होते हैं अतः उनका रेलवे कुली के प्रति रोजमर्रा के कार्य जीवन में व्यवहार की स्थिति देखने में असंगत ही प्रतीत होता है।

सारणी–11

रेलवे के अन्य पदाधिकारी आपके साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

आचरण और व्यवहार	आवृत्ति	प्रतिशत
सम्मान का भाव	100	66.7
निम्न स्तर का मेलजोल	50	33.3
कुल योग	150	100

150 उत्तरदाताओं में 100 लोगों ने अर्थात् 66. 7 प्रतिशत ने इस बात को माना कि उनका व्यवहार सम्मानजनक नहीं होता है। केवल 50 लोगों ने अर्थात् 33.3 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाता है।

बीमा के प्रावधान की स्थिति

बीमा से जीवन में दुर्घटनाओं/जोखिम के प्रति व्यक्ति के परिवार को एक आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। साथ ही अनिश्चितता की स्थिति में व्यक्ति को एक सामाजिक मजबूती भी प्रदान करता है। बीमा से ना केवल सामान्य व्यक्ति बल्कि सरकारें भी अपने कर्मचारियों को एक सामाजिक सुरक्षा के रूप में एक प्रोत्साहन देती हैं। विशेषकर उनके लिए जिनकों वृद्धावस्था में कार्य के छुट जाने के बाद कोई सामाजिक सुरक्षा की गारन्टी नहीं होती है जिससे कि वह अपने सामाजिक जीवन को गुणवत्ता पूर्वक निर्वाह कर सके। उनको एक सुरक्षा कवच प्रदान करती है। समाज के कमजोर समूह के लिए सरकारें स्वेच्छा से इस प्रकार की सुविधाऐं भी देती हैं।

सारणी–12

रेलवे द्वारा आपको सुरक्षा बीमा दिया जाता है या नहीं

बीमा	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	3	2.0
नहीं	147	98.0
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में 147 अर्थात् 98 प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया है कि उन्हें कोई भी सुरक्षा बीमा नहीं दिया जाता है। वहीं 03 लोगों ने अर्थात् 02 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि उनको सुरक्षा बीमा दिया जाता है।

दुर्घटना के समय रेलवे से प्राप्त सहायता की स्थिति

रेलवे कुली का कार्य जोखिम भरा माना जाता है क्योंकि अक्सर रेलवे स्टेशनों पर भारी भीड़ एवं रेल आवागमन के बीच कार्य करना पड़ता है और सामान ढोते वक्त टकराकर या फिसलकर गिरने या कोई अन्य आकस्मिक दुर्घटना होने की पूरी सम्भावना होती है। दुर्घटना होने के बाद हास्पिटल का खर्चा कम आय समूह के लिए एक बड़ा बोझ बन जाता है। अन्ततोगत्वा इसका परिवार पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।

सारणी–13

कभी दुर्घटना हो जाय तो रेल प्रशासन से कोई सहायता मिलती है।

सहायता	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	150	100
नहीं	00	00
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में लगभग सभी लोगों ने यह स्वीकार किया कि उन्हें कोई भी मेडिकल या आपात सुविधा नहीं दी जाती है।

पिता के कार्य का विवरण

सामाजिक गतिशीलता को व्यक्ति के प्रगति का प्रतीक माना जाता है इसके साथ सामाजिक जीवन में सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी इससे जुड़ा होता है। जिस समाज में सामाजिक गतिशीलता का अवसर जीतना अधिक होता है समाज को प्रगतिशील एवं उन्नत रूप में स्वीकार किया जाता है साथ ही इसे सामाजिक विकास का एक आधारभूत तत्व भी माना जाता है।

सारणी–14

आपके पिता जी क्या कार्य करते हैं।

कार्य	आवृत्ति	प्रतिशत
खेती	5	3.3
कुछ नहीं	00	00
कुली थे	145	96.7
श्रमिक हैं	00	00
कुल योग	**150**	**100**

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के प्रतिउत्तर में 145 अर्थात् 96.7 प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया कि उनके पिता भी कुली का कार्य करते थे। मात्र 05 लोग अर्थात् 3.3 प्रतिशत में स्वीकार किया कि उनके पिता किसी कार्य से जुड़े है।

बच्चों की पढ़ाई लिखाई की स्थिति

शिक्षा को मानव जीवन एवं अन्ततोगत्वा सामाजिक गुणवत्ता के लिए आधार एवं स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया जाता है। यहाँ तक की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्पादन एवं पुर्नउत्पादन के रूप में एक सांस्कृतिक संस्था माना जाता है। साथ ही इसे पीढ़ी निर्माण का आधारभूत साधन के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। यहीं कारण है कि प्राथमिक शिक्षा (05 से 14 वर्ष तक की शिक्षा) आज मौलिक अधिकार का भाग है।

सारणी–15

आप बच्चों को पढ़ाते लिखाते हैं।

शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	145	96.7
नहीं	5	3.3
कुल योग	150	100

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में 145 अर्थात् 96.7 प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया कि वे अपने बच्चों को पढ़ाते-लिखाते है जबकि 5 लोगों ने अर्थात् 3.3 प्रतिशत ने यह माना की वह अपने

बच्चों को कोई औपचारिक शिक्षा देने के प्रति उदासीन दिखे।

बच्चों के विवाह के चयन के प्रति अभिभावक की सोच

विवाह एक धार्मिक संस्था है। अधिकांश अध्ययनों में इस बात को स्वीकार किया गया है कि अर्न्तविवाह प्रगतिशील सोच का प्रतीक होता है और जातिवाद जैसी संस्था को अन्तर्विवाह के द्वारा ही कमजोर किया जा सकता है।

सारणी–16

आप अपने बच्चों की शादी कहाँ करेंगे

विवाह	आवृत्ति	प्रतिशत
अपनी जाति में	147	98.0
बच्चों की जहां मर्जी	3	2.0
कुल योग	150	100

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये जवाब में 147 अर्थात् 98 प्रतिशत लोगों ने अपने बच्चों को अपने ही जाति में विवाह के लिए प्रेरित करना स्वीकार किया। मात्र 03 लोगों ने अर्थात् 2 प्रतिशत ने ही अर्न्तजातीय विवाह के प्रति सहमति दिखाई।

बच्चों के शिक्षा के संस्थान की स्थिति

भारत में अक्सर सरकारी एवं प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा को लेकर एक विरोधात्मक स्थिति देखने को मिलती है। अधिकांश लोगों का मत है कि प्राइवेट संस्थान शिक्षा की गुणवत्ता एवं अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के लिए समुचित व्यवस्था प्रदान करते हैं। जबकि अधिकांश सरकारी संस्थानों को अव्यवस्थायुक्त माना जाता है, जहाँ बच्चे शिक्षा के लिए नहीं छात्रवृत्ति एवं अन्य सरकारी सेवाओं को प्राप्त करने के लिए दाखिला लेते है। दूसरे अध्ययनों में यह देखा गया है कि इनमें उनके बच्चें अधिकांश वे होते हैं जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करते है।

सारणी–17

आप अपने बच्चों को कहाँ पढ़ाते हैं।

शिक्षा संस्थान	आवृत्ति	प्रतिशत
प्राइवेट स्कूल	45	30.0
सरकारी स्कूल	97	64.7
दोनों	3	2.0
कुल योग	150	100

150 उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न के जवाब में 97 लोगों ने अर्थात् 64.7 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि वह अपने बच्चों को सरकारी संस्थानों में पढ़ने के लिए भेजते हैं जबकि 45 लोगों ने अर्थात् 30 प्रतिशत यह स्वीकार किया वे अपने बच्चों को प्राइवेट संस्थाओं में भेजते हैं। इनमें से शेष 3 लोगों ने अर्थात् 2 प्रतिशत ने यह माना कि वे अपने बच्चों को प्राइवेट और सरकारी दोनों संस्थाओं में शिक्षा के लिए भेजते हैं।

निष्कर्ष

प्राप्त तथ्यों एवं उनके विश्लेषण से हम स्पष्ट तौर पर देख सकते हैं कि रेलवे कुलीयों के कार्य का न तो कोई निश्चित समय है न ही आय का कोई निश्चित स्वरूप है जिसके द्वारा परिवार के लोगों का समुचित भरण–पोषण कर सकें न ही शिक्षा की समुचित व्यवस्था है जो व्यक्ति के जीवन एक का एक निर्धारक होता है और सबसे महत्वपूर्ण श्रम का उत्पादन एवं पुर्नउत्पादन उनको यथास्थिति बनाये रखने की ओर दृष्टिगोचर करता है और यह अन्ततोगत्वा एक वस्तुनिष्ठ समस्या के तौर पर एक सामाजिक समूह संगठित क्षेत्र में अपने अस्तित्व के लिए 100 वर्षों के इतिहास के साथ आज भी लगा हुआ है।

नोट

प्रस्तुत शोध पत्र में 150 उत्तरदाताओं के प्राथमिक आँकड़ों को प्राप्त करने के लिए मात्रात्मक शोध पद्धति के अन्तर्गत निर्गमनात्मक तर्क का प्रयोग करते हुए वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध डिजाइन के साथ शोध पत्र के कार्य को पूरा किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *आनन्द, मुल्क राज. 1993, कुली. न्यू दिल्ली : पेग्विन बुक्स.*
2. *अन्ना लियोव, गोयरूीयू: 2016, हाउ ए प्राबलम विकम ए इसू : सेज पब्लिकेशन*
3. *अग्रवाल, रीना, 2009, एन इकोनामिक ऑफ इनफार्मल वर्क : द केस ऑफ इण्डिया, रिसर्च इन द सोशियोलाजी ऑफ वर्क, वाल्यूम 18*
4. *आइ. एल. ओ. 1994., द अर्बन इनफार्मलसेक्टर इन एशिया : पॉलिसीज एण्ड स्ट्रेटजीस. जेनेवा : आइ. एल. ओ.*
5. *दत्त एण्ड सुन्दरम. 2007., भारतीय अर्थव्यवस्था, न्यू दिल्ली : एस. चन्द पब्लिकेशन्स.*
6. *देशपाण्डे, सतीश. 2003., कन्टेम्परेरी इण्डिया : सोशियोलॉजिकल व्यू. न्यू दिल्ली : पेग्विन बुक्स.*
7. *देशार्ड, मेघनाथ, 2013, इनफामेल वर्क, इण्डियन जर्नल ऑफ इण्डस्ट्रीयल रिलेसंस, वाल्यूम–48 नम्बर 3*
8. *ब्रिमेन, जे. 2003., ''इन्फार्मल सेक्टर''. इन बीना दास. (इड.). कम्पेनियन टू सोशियोलॉजी एण्ड सोशल एन्थोपोलोजी. न्यू दिल्ली. आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.*
9. *भट्ट इला एण्ड झाववाला, रेनन 2004, द आइडिया ऑफ वर्क, इकानामी एण्ड पोलिटिकल विकली वाल्यूम, 39 नम्बर 48*
10. *भौमिक, सरित0के 2009, इण्डियाः लेबर सोशियोलॉजी सर्चिंग फार ए डायरेक्शन वर्क एण्ड आकूपेशन, वाल्यूम 36, नम्बर 2*
11. *भौमिक,सरित0के0 2006, सोशियोलॉजी ऑफ वर्क इन इण्डिया फ्रैकफर्ट डब्ल्यू0डब्ल्यू0डब्ल्यू0 एस0एस0ओ0 ए0आर0इनको*
12. *श्रीवास्तव, रवि0एस0 1997, रिव्यू इनफार्मलाइजेशन ऑफ द वर्ककोर्स, इकोनामी एण्ड पालिटिकल विकली, वाल्यूम 32 नम्बर 5*
13. *झाववाला,रेनन 2013, इन्फार्मल वर्करस एण्ड द इकोनांमी इण्डियन जर्नल ऑफ इण्डास्ट्रीयल रिलेशन वाल्यूम 48 नम्बर 3*

14. *कादिर, इमराना एण्ड राय, डूनू, 1989, वर्क वेल्थ, एण्ड हेल्थः सोसियोलाजी ऑफ बकेरसे हेल्थ इन इण्डिया, सोसल साइन्टिस्ट, वालूम–17 नं0–5/6*
15. *रिटजर, जार्ज. 2016., क्लासिकल सोसियोलॉजिकल थिरोरी, न्यू दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स*
16. *वोरदियू, पियरे. 1986., ''दी फार्म ऑफ कैपिटल'' इन जॉन. जी. रिचर्डसन (इड.) टैक्स बुक ऑफ थियोरी एण्ड रिसर्च इन द सोसियोलॉजी ऑफ एजूकेशन. न्यूयार्क : ग्रीन वुड प्रेस.*
17. *पटेल, सुजाता (2018), आज के शहरी अध्ययनों पर पुर्नविचार, भारतीय समाजशास्त्री समीक्षा अनुवादित द्वारा डी0आर0 साहू एवं नीरज कुमार राय*
18. *हरलम्बोस, एम. वीथ हेल्ड, आर.एम. 2016, थीम्स एण्ड पर्सपेक्टिव. न्यू दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी. ऑक्सफोर्ड प्रेस*
19. *वेकटरत्नम, सी0एस0 2000, इण्डिया एण्ड इन्टरनेशनल लेबर ईण्डर्डस, लूण्डियन जर्नल ऑफ इण्डार्स्टयल रिलेशन्स वाल्यूम 35, नम्बर 4*